Training Programme on
Cultivation of Important Temperate Medicinal Plants - An Option for Diversification and Additional Income for Farmers: A Report
(Held at Wild Life Interpretation Centre from dated 18th & 19th November, 2012)

Under National Medicinal Plants Board, New Delhi sponsored Network project on "Population assessment and identification of superior genetic stock of *Picrorhiza kurroa* Royle ex Benth and *Valeriana jatamansi* Jones by screening different populations from North-Western Himalayas (H.P. and Uttarakhand), Himalayan Forest Research Institute (HFRI) Shimla, (H.P.) organized two days training and demonstration programme on **'Cultivation of Important Temperate Medicinal Plants - An Option for Diversification and Additional Income for Farmers'** at Wildlife Interpretation Centre, Manali of district Kullu, (H.P.) from 18-19th November 2012. For reaching out more effectively the training programme was organized in active collaboration with Krishi Vigyan Kendra (KVK), Bajura, Kullu (H.P.) of CSKHPKV, Palmpur which comes under the umbrella of Indian Council of Agriculture Research (ICAR).

Sh. P.D. Dogra, IFS, DFO, **Wildlife, Kullu (HP)** inaugurated the training programme and during his inaugural address explained about the importance of organizing such training programme and appreciated HFRI, Shimla for this collaborative approach for the ultimate benefit of stakeholders. He told that the North-West Himalaya has the distinction of being one of the richest repositories of medicinal and aromatic plants resources in the country. Himalayan herbs have received unprecedented attention the world over and it is the high time to harness the potential of these medicinal plants for augmentation of rural income.

Mr. Jagdish Singh, Scientist-E and Coordinator of the training programme welcomed approximately 50 no. of the participants and also the resource persons invited for this training programme. He also briefed about the day's event and subsequently made a institutional presentation for highlighting the Institutional activities. Dr. Sandeep Sharma, Scientist-E, of the institute highlighted the importance of medicinal plants and explained specific cultivation techniques of Atish (*Aconitum heterophyllum*), Kutki (*Picrorhiza kurroa*), Mushakbala (*Valeriana jatamasi*) & Chora (*Angelica glauca*), organic cultivation and marketing. Macro-proliferation techniques were practically demonstrated to the participants by the experts. Sh. Jagdish Singh, Scientist-E, talked about identification of important temperate medicinal plants, inter-cultivation of medicinal plants in apple orchards, harvesting and processing of medicinal plants and about screening of superior germplasm of Kutki and Mushakbala from Himachal Pradesh and Uttarakhand for further multiplication and distribution among various end users. Dr Chanderkanta Scientist of KVK delivered lecture on importance of minor millets and how to recapitulate it for sustainable income generation.

A field trip was also organized for the benefit of participants **at Field Research Station, Brundhar, Jagatsukh (HP)** wherein Sh. Budi Singh, Dy. RO, Sh. Murat Singh, FG and Sh. Rajinder Pal; demonstrated the macro-proliferation techniques of important medicinal plants, nursery and plantation techniques, Vermicomposting and Green Composting etc.

During the plenary session of the training, all the experts freely interacted with the participants. The relevant queries of the farmers, those who were present during the training were duly addressed through expert opinion. In the end on behalf of Director a special Vote of Thanks was extended by Dr. Sandeep Sharma, HFRI, and Shimla. Media also covered the event quite widely to create awareness **about medicinal plants cultivation.**

Group Photo of Participants & Resource persons

Resource person delivering lecture

Field Visit of Participants

Demonstration of Vermicomposting

अमर उजाला
मंगलवार 20 नवंबर 2012

...तो अब औषधीय पौधे बरसाएंगे नोट

उच्च गुणवत्ता वाले पौधों की पहचान पूरी किसानों को जल्द मिलेगी इनकी पौध

मनाली। जिला के किसान अब औषधीय पौधों की खेती कर अपनी आर्थिक स्थिति और मजबूत कर सकेंगे। वैज्ञानिकों ने औषधीय पौधे कंडू, निहानी तथा वन ककड़ी के उच्च गुणवत्ता वाले पौधों की पहचान कर ली है। इनकी पौध तैयार कर इन्हें किसानों के बीच बांटा जाएगा।

यह जानकारी मनाली में समशीतोष्ण औषधीय पौधों की खेती और किसानों की खुशहाली पर आयोजित कार्यक्रम में वैज्ञानिकों ने दी। शिविर का शुभारंभ वन्य प्राणी विभाग के वन मंडल अधिकारी पीडी डोगरा ने किया। कहा कि यह क्षेत्र कई बहुमूल्य जड़ी-बुटियों से भरपूर है। इन जड़ी बुटियों का समुचित दोहन और कृषिकरण किसानों की आर्थिक स्थिति को

समशीतोष्ण पौधों की खेती के बारे में भी दी गई जानकारी

मजबूत कर सकती है। प्रशिक्षण के समन्वयक और वैज्ञानिक जगदीश सिंह ने कहा कि औषधीय पौधे कंडू, निहानी तथा वन ककड़ी के उच्च गुणवत्ता वाले पौधों की पहचान कर ली है। इनकी पौध तैयार कर इन्हें किसानों के बीच बांटा जाएगा। प्रशिक्षण के दौरान संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डाक्टर संदीप शर्मा ने महत्वपूर्ण समशीतोष्ण औषधीय पौधों पतीश, कंडू, निहानी तथा चौरा की खेती बारे जानकारी दी। इस मौके पर बुद्धि सिंह, मुरत सिंह और राजेंद्र पाल सहित कई प्रशिक्षणार्थी मौजूद रहे। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डाक्टर संदीप शर्मा ने संस्थान के निदेशक डाक्टर वीआरआर सिंह का आभार प्रकट किया।

दिव्य हिमाचल
मंगलवार 20 नवम्बर, 2012

मंडी-कुल्लू

20 नवंबर, 2012.

मजबूत आर्थिकी के लिए प्रयास

मनाली में जैविक खेती पर जानकारी

निजी संवाददाता, मनाली

- वन मंडलाधिकारी पीडी डोगरा ने किया प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ
- किसानों-बागबानों को औषधीश पौधों की सौगात जल्द

राष्ट्रीय पादप बोर्ड दिल्ली द्वारा प्रायोजित नेटवर्क परियोजना के तहत हिमाचल वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा कृषि विज्ञान केंद्र बजौरा कुल्लू के सहयोग से 18 व 19 नवंबर को महत्त्वपूर्ण समशीतोष्ण औषधीय पौधों की खेती व किसानों की खुशहाली हेतु एक अतिरिक्त साधन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं प्रदर्शन का आयोजन किया गया है। प्रशिक्षण का शुभारंभ पीडी डोगरा वन मंडलाधिकारी वन्य प्राणी विभाग ने किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि यह क्षेत्र कई बहुमूल्य जड़ी-बुटियों से समृद्ध हैं। इन जड़ी बुटियों का समुचित दोहन व कृषिकरण द्वारा किसानों की आर्थिकी को मजबूत किया जा सकता है। प्रशिक्षण के समन्वयक व वैज्ञानिक जगदीश सिंह ने आसपास के क्षेत्रों के किसानों व बागबानों को संबोधित करते हुए कहा कि संस्थान द्वारा औषधीय पौधों जैसे कंडू, निहानी तथा वन ककड़ी की उच्च गुणवत्ता वाले पौधों की पहचान कर ली गई है। इन पौधों की वृहद विभाजन तकनीक द्वारा बड़ी संख्या में पौधे तैयार किए जा रहे हैं, जो किसानों-बागबानों के बीच बांटे जाएंगे। इससे किसान व बागबान अपनी आर्थिकी में सुधार ला सकता है। प्रशिक्षण के दौरान संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डाक्टर संदीप शर्मा ने महत्त्वपूर्ण समशीतोष्ण औषधीय पौधों जैसे पतीश, कंडू, निहानी तथा चौरा की व्यावसायिक कृषिकरण तकनीकी, किसान नर्सरी तथा जैविक खेती आदि विषय पर विस्तृत जानकारी प्रदान की। उन्होंने औषधीय पौधों के बीजों, बुआई चुनना एवं प्रत्यारोपण करना तथा जैविक कृषि कंपोस्ट एवं वर्मी कंपोस्ट बनाने की विधियां एवं नर्सरी में उर्वरक प्रबंधन बारे जानकारी दी। वरिष्ठ वैज्ञानिक के बीके बजौरा ने प्रशिक्षण के दौरान समुचित प्रबंधन द्वारा बागबानी से अधिक आय विषय पर महत्त्वपूर्ण जानकारी दी। बुद्धि सिंह, मुरत सिंह व राजेंद्र पाल द्वारा सभी प्रशिक्षार्थियों को संस्थान के क्षेत्रीय अनुसांधान स्टेशन जगतसुख का भ्रमण करवाया गया, जहां उन्हें औषधीय पौधों की खेती तथा कायिक जनन विधि का प्रयोगात्मक प्रदर्शन करवाया गया। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डाक्टर संदीप शर्मा ने संस्थान के निदेशक डाक्टर वीआरआर सिंह की ओर से सभी प्रतिभागियों का आभार प्रकट किया तथा आशा व्यक्त की। इस प्रशिक्षण से प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए होंगे। उन्होंने आश्वासन दिया कि औषधीय पौधों की खेती संबंधी किसी भी प्रकार की कठिनाई को दूर करने के लिए संस्थान हमेशा प्रयासरत रहेगा।

हिमाचल दस्तक
मंगलवार 20 नवम्बर 2012

औषधीय पौधों पर बांटी जानकारी

मनाली। हिमाचल वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा कृषि विज्ञान केंद्र बजौरा के सहयोग से महत्वपूर्ण समशीतोष्ण औषधीय पौधों की खेती व किसानों की खुशहाली के लिए एक अतिरिक्त साधन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं प्रदर्शन का आयोजन वन बिहार मनाली में किया गया। प्रशिक्षण का शुभारंभ पीडी डोगरा वन मंडलाधिकारी वन्य प्राणी विभाग ने किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि यह क्षेत्र कई बहुमूल्य जड़ी-बुटियों से समृद्ध है। इन जड़ी बूटियों के समुचित दोहन व कृषिकरण से किसानों की आर्थिकी को मजबूत किया जा सकता है। प्रशिक्षण के समन्वयक व वैज्ञानिक जगदीश सिंह ने आसपास के क्षेत्रों के किसानों व बागवानों को संबोधित करते हुए कहा कि संस्थान द्वारा औषधीय पौधों जैसे कंडू, निहानी तथा वन ककड़ी की उच्च गुणवता वाले पौधों की पहचान की गई है। इन पौधों की वृहद विभाजन तकनीक से बड़ी संख्या में पौधे तैयार किए जा रहे हैं , जो किसानों-बागवानों के बीच बांटे जाएंगे।

दैनिक जागरण
मंगलवार 20 नवम्बर 2012

औषधीय पौधों की प्रदर्शनी लगाई

मनाली। राष्ट्रीय पादप बोर्ड दिल्ली द्वारा प्रायोजित नेटवर्क परियोजना के तहत कृषि विज्ञान केंद्र बजौरा कुल्लू के सहयोग से 18 व 19 नवम्बर को महत्वपूर्ण समशीतोष्ण औषधीय पौधों की खेती व किसानों की खुशहाली हेतु एक अतिरिक्त साधन पर मनाली में प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं प्रदर्शन किया। प्रशिक्षण का शुभारंभ पीडी डोगरा वन मंडलाधिकारी वन्य प्राणी विभाग ने किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि यह क्षेत्र कई बहुमूल्य जड़ी-बूटियों से समृद्ध है। इन जड़ी बूटियों का समुचित दोहन व कृषिकरण द्वारा किसानों की आर्थिकी मजबूत कर सकते हैं। समन्वयक जगदीश सिंह कहा कि संस्थान द्वारा औषधीय पौधों जैसे कंडू, निहानी तथा वन ककड़ी की उच्च गुणवत्ता वाले पौधों की पहचान कर ली गई है।